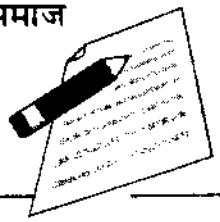

23

भारतीय सामाजिक चिन्तन

इस पाठ में आपको यह जानकारी प्राप्त होगी कि भारतीय सामाजिक विचारकों का भारतीय समाज को समझने में क्या योगदान है। आप यह भी जानेंगे कि इन विचारकों का भारतीय संस्कृति के धार्मिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में क्या महत्व है। हम यहाँ भारत की केन्द्रीय विचारधारा, जो सिंधु घाटी सभ्यता से स्वामी विवेकानंद तक का संक्षेप में विवरण देंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- भारत के प्रारम्भिक धर्मों और दर्शन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- इस संदर्भ में कतिपय भारतीय विचारकों के योगदान को समझ सकेंगे।

23.1 ऊपरी दृष्टिकोण

23.1.1 प्रारम्भिक सभ्यता : सिंधु घाटी सभ्यता (3000–2000 ई. पू.)

भारत में सामाजिक चिन्तन का प्रारम्भ मोहनजोदड़ो की खोजों से माना जाता है। इस सभ्यता में एक शहर का निर्माण कोई पाँच हजार वर्ष पूर्व हुआ था। इन खोजों से ज्ञात होता है कि उस समय में लोगों की जीवन पद्धति क्या थी। जो कुछ अवशेष हमें मिलते हैं, उनसे प्राप्त होता है कि कुछ अवशेष शक्ति के रूप में माँ को बताते हैं। पुरुष के

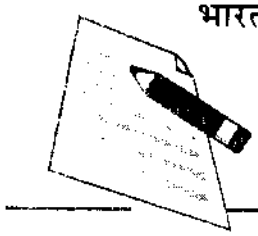

Notes

लिंग की प्राप्ति भी है और एक पुरुष परमात्मा के रूप में योगी की अवस्था में मिलता है। कई विद्वानों का कहना है कि यह योगी का स्वरूप भगवान शिव का प्रारम्भिक स्वरूप है। कुछ पुरातत्वविद कहते हैं कि शिव की उपासना लिंग के रूप में सिन्धु घाटी से ही प्रारम्भ होती है।

23.1.2 वेद

आर्य सभ्यता और इससे जुड़े हुए विचारों की जानकारी हमें कुछ पवित्र ग्रन्थों से मिलती है, जिन्हें हम वेद कहते हैं। वेदों का आशय श्लोकों के चार संग्रहों से है, जिन्हें संहिता कहते हैं। ये संग्रह ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद हैं। आर्य जब भारत में आकर बसे तत्पश्चात् उन्होंने इस वैदिक साहित्य का निर्माण किया। वैदिक साहित्य में कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इन ग्रन्थों में संहिता ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद सम्मिलित हैं। इन चारों ग्रन्थों को निश्चित समयावधि में रखा गया है। यह समयावधि वैदिक साहित्य के विकास की परम्परा में है। इस सम्पूर्ण साहित्य का पाठ ऋग्वेद संहिता में है।

वैदिक साहित्य के निर्माण में ऋग्वेद का निर्माण सबसे पहले हुआ। इस वैदिक साहित्य की स्थापना को वेद कहते हैं। ऋग्वेद की दस पुस्तकें हैं। इन्हें मण्डल भी कहते हैं। ऋग्वेद को भजनावली भी कहते हैं। भजनावली में उन सामान्य वस्तुओं की अभिव्यक्ति है, जो दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं से जुड़ी हुई हैं। आर्य लोग जिन आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहते थे – उनमें पशु-सम्पत्ति, घोड़े और भोजन थे। कभी-कभी आवश्यकताओं को पूरी करने वाले इन श्लोकों में युद्ध में विजय, वर्षा और बच्चों की प्राप्ति के लिए भी प्रार्थनाएं थी। ऋग्वेद में इन्द्र, अग्नि, वरूण, सूर्य और अन्य देवताओं की उपासना भी होती थी। इस तरह ऋग्वेद के माध्यम से हमें लोगों के धार्मिक विश्वासों सामाजिक-आर्थिक जीवन के बारे में मालूम होता है। उदाहरण के लिए, इस ग्रन्थ में बहुत अधिक पुत्रों के लिए प्रार्थना की गयी है। इसका आशय है वैदिक युगीन परिवार में पुरुष के जन्म को अधिक महत्व दिया गया है।

सामवेद की रचना वैदिक युग के बाद हुई। इस वेद में ऋग्वेद के उन भागों पर जोर दिया गया है, जिन्हें योज के समय में गाया जाता था। क्योंकि सामवेद अधिक करके ऋग्वेद के श्लोकों का ही प्रयोग करता है, इसका ऐतिहासिक और साहित्यिक मूल्य कम है। यह होते हुए भी सामवेद को उसके स्वर माधुर्य के लिए एक जादुई शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण समझा जाता है।

यजुर्वेद के दो प्रकार हैं। पहला प्रकार, शुक्ल यजुर्वेद है और दूसरा कृष्ण यजुर्वेद है।

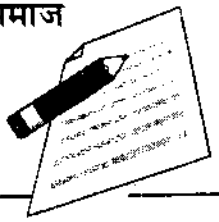

इन दोनों प्रकारों में मुख्य अन्तर यह है कि शुक्ल यजुर्वेद में यजुर्व के मंत्र प्रमुख हैं और इसीलिए इसे यजुर्वेद कहते हैं। दूसरा प्रकार वह है, जिसमें यजन से जुड़े कर्मकाण्डों का विवेचन है। अथर्वेद वेदों की आखिरी कड़ी है। इसका निर्माण अंत में हुआ था। इस वेद में आदिम जादू के श्लोकों को रचा गया है। इसका निर्माण लोगों की भाँति-भाँति की इच्छाओं जिनमें रोगों से मुक्ति या प्रेमिका के दिल को जीतने के श्लोक हैं। ऐसा लगता है कि इन श्लोकों के कुछ विचार और विश्वास आम लोगों ने आदिवासियों से सीखे, जब वे उनकी संस्कृति के निकट आए।

वैदिक साहित्य का अगला स्वरूप ब्राह्मण है। ब्राह्मण गद्य में लिखे गये हैं और इनमें चार वेदों के बारे में टिप्पणियां की गयी हैं। अतर्य, कौशिटिकी, जेमिनीया, स्तापना और टेनिट्रिया आदि कुछ ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों के उपसंहार को अरण्यक या ऐसे शलोक जो वनों में बनाये गये थे भी कहते हैं। ऐसा लगता है कि ब्राह्मणों के श्लोक इतने गोपनीय थे कि उन्हें केवल जंगलों में ही बनाया जा सकता था और उनका अध्ययन भी जंगलों में ही हो सकता था। ये श्लोक यज्ञ के कर्मकाण्ड से जुड़े हुए थे तथा इनका उद्देश्य कर्मकाण्ड के दर्शन का विवेचन करना था।

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्वेद, चार वेद हैं। अरण्यक का निर्माण संभवत: जंगलों में हुआ था। उपनिषद भारतीय चिन्तन के अंतिम आधार हैं।

23.1.3 पुनर्विचार का युग

उपनिषदों के निर्माण के बाद जो नया युग आया, वह भक्ति युग था। भक्ति युग में लोग जिन देवताओं में उनका विश्वास था, वे व्यक्तिगत ईश्वर थे। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी विश्वास के अनुसार, किसी देव या देवी की उपासना करते थे। इससे पहले अवैयक्तिक ईश्वर यानी ब्रह्म की उपासना की जाती थी। यह उपासना चिन्तन और ज्ञान से जुड़ी थी। इसी युग में बौद्ध और जैन धर्म आए।

गौतम बुद्ध और महावीर

गौतम बुद्ध, बौद्ध धर्म के संस्थापक का जन्म एक राजपरिवार में हुआ था। वे 80 वर्ष तक जीवित रहे, उनकी मृत्यु 487 ई. पू. हुई। उन्हें 35 वर्ष की उम्र में बुद्ध होने का ज्ञानोदय प्राप्त हुआ। 532-437 ई. पू. में उन्हें अपने विचारों के मूलभूत सिद्धान्तों का पता लगा। इन विचारों को ही बौद्ध धर्म कहते हैं।

वर्धमान महावीर जिन्हें जैन धर्म का संस्थापक कहते हैं, का जन्म वैशाली में हुआ था।

उन्हें परम ज्ञान की प्राप्ति 42 वर्ष की उम्र में हुई। उनके धार्मिक जीवन का काल 497-467 ई. पू. है। परन्तु जैन धर्म की समयावधि इस काल से भी अधिक है। जैन धर्म का विश्वास है कि महावीर से पहले भी 23 तीर्थंकर हुए हैं और महावीर अंतिम तीर्थंकर थे। जैन धर्म में एक बड़ी समृद्ध कहानियों की परम्परा है जो 24 तीर्थंकारों के ईर्द-गिर्द घूमती है। बुद्ध धर्म किसी एक सर्वोच्च ईश्वर को मान्यता नहीं देता। ईश्वर के साथ जुड़े हुए विचारों का इसमें कोई स्थान नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि बौद्ध धर्म में कोई व्यक्तिगत विचार हो, जिसके आसपास भक्ति और निकटता हो। बौद्ध धर्म के अनुसार, मोक्ष या निर्वाण प्राप्त करने के लिए या आवागमन के फेर से मुक्त होने के लिए कोई ईश्वर हो। यह धर्म तो केवल नैतिक सिद्धान्तों पर ही मनुष्य को निर्वाण देता है। यह धर्म हिन्दू धर्म की तरह वर्ण और जाति को स्वीकार नहीं कराता। पशु बलि को भी बौद्ध धर्म नहीं मानता।

बौद्ध धर्म के बहुत से लक्षणों को जैन धर्म मानता है। यह धर्म अहिंसा स्वीकार करता है जो कि इस धर्म की केन्द्रीय धारा है। जैन धर्म अपने सिद्धान्तों पर जैसे कि व्रत करना, यौन सम्बन्धों को कम करना, आदि पर जोर देता है। इस धर्म का विश्वास है कि मनुष्य को अपने आपको पवित्र बनाना चाहिए। आत्मा अनन्त है। इसका मानना है कि कोई भी आत्मा शाश्वत नहीं है, जिसमें व्यक्ति की आत्मा विलीन हो जाए।

जैन धर्म को स्वीकार करने की प्रेरणा नंद वंश के राजाओं और चन्द्रगुप्त मौर्य (321-296 ई. पू.) से प्राप्त हुई। चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में जैन धर्म का विस्तार लगभग सम्पूर्ण भारत में हुआ। लेकिन इस धर्म में आगे चलकर दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदाय भी आए। दिगम्बर वे हैं, जिनके वस्त्र दिशाएँ हैं अर्थात् जो वस्त्र नहीं पहनते और श्वेताम्बर वे हैं, जो श्वेतवस्त्र ही पहनते हैं। बौद्ध धर्म को भारत में मुख्य स्थान इसलिए मिला कि इसे अशोक (273-236 ई. पू.) चन्द्रगुप्त मौर्य के पौत्र ने अपनाया। अशोक के संरक्षण में बौद्ध धर्म भारत से भी बाहर कई और देशों तक फैल गया। बौद्ध धर्म के प्रभुत्व के साथ जैन धर्म पूर्वी भारत में अपना प्रभुत्व खो चुका था लेकिन दक्षिण और पश्चिम में जैन धर्म को एक संरक्षण मिल गया।

पाठगत प्रश्न 23.1

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) भारत में सामाजिक विचारों का प्रारम्भ ..... की सभ्यता से है।

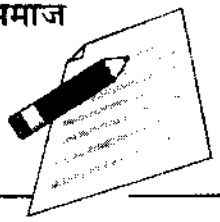

Notes

(2) आर्यों की सामुहिक रूप से तैयार की गयी पुस्तकों .....को साहित्य कहा जाता है।

(3) यज्न का मतलब है .....।

(4) हिन्दू धर्म के बुनियादी लक्षणों का उद्गम निम्न हैं.....।

(5) बौद्ध धर्म के संस्थापक का जन्म..... परिवार में हुआ।

(6) .....का जन्म वैशाली में हुआ।

(7) .....पद का मतलब जैन धर्म के 24 आचार्यों से है।

(8) .....से तात्पर्य हिंसा का अभाव है।

(9) हिन्दू समाज को चार वर्णों में बांटा गया है.....।

23.2 ब्राह्मणवाद का पुनरुत्थान

इतिहासकार ईसा से चौथी शताब्दी बाद के समय को एक बहुत बड़ा परिवर्तन मानते हैं। इस समय के बाद ब्राह्मण धर्म यानी हिन्दू धर्म धीरे-धीरे प्रभुत्वशाली हो गया। बौद्ध और जैन धर्म कमजोर हो गये। 12वीं शताब्दी के बाद भारत में बौद्ध धर्म लगभग समाप्त हो गया तथा जैन धर्म पश्चिम और दक्षिण भारत में एक स्थानीय धर्म की तरह विकसित हुआ। बौद्ध और जैन धर्म के क्रमशः पतन के बाद हिन्दू धर्म प्रभुत्व में आ गया।

इस पतन और विकास की प्रक्रिया में भारत में जो धार्मिक सजातीयता थी, जिसमें कई नये धार्मिक सम्प्रदाय विकसित हुए। इन सम्प्रदायों में शैव, शाक्त, और वैष्णव हैं। जैसाकि हम जानते हैं कि शैव धर्म शिव की पूजा करता है, शाक्त का सरोकार पार्वती, वैष्णव धर्म पर आधारित विष्णु और उसके अवतारों से है।

23.3 कौटिल्य का राज्य कौशल

राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र के विचारों का व्यवस्थित ब्यौरा हमें कौटिल्य से मिलता है। कौटिल्य को चाणक्य और विष्णुगुप्त के नाम से जाना जाता है। जन्म से वे ब्राह्मण थे। ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म तक्षशिला में हुआ था। उनका जीवन एक चिकित्सक की तरह था। वे प्रसिद्ध विचारक थे, यूनान तथा फारस की बौद्धिक परम्पराओं से परिचित थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के वे मित्र, सलाहकार और मुख्यमंत्री थे। मौर्य प्रशासन के वे मुख्य वास्तुकार थे। उनकी पुस्तक अर्थशास्त्र 15 जिन्दों में लिखी गयी

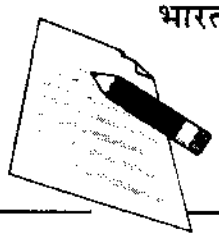

Notes

है, जिसका निर्माण शायद ई. पू. चौथी शताब्दी में हुआ है। यह कहा जाता है कि अर्थशास्त्र का मौलिक पाठ प्रारम्भ में खो गया था। इसके बाद 1909 में इसके मूलपाठ को खोजा गया और इसे छापा गया।

अर्थशास्त्र का अध्ययन यह बताता है कि प्रशासन की कुशलता का विकास एक लम्बी अवधि में हुआ होगा। इसके विकास में राजनीति विज्ञान के पूर्ववर्ती विद्वानों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस विज्ञान के सिद्धान्तों को संपादित करके वे इस पर अपनी टिप्पणी करते हैं। इस टिप्पणी में वे शुक्र और वृहस्पति नाम के दो राजनीतिक विचारकों का बिस्तार से विवरण देते हैं। वे इस विश्लेषण में चार-पाँच राजनीतिक विचारों का लगभग एक दर्जन लेखकों, आचार्यों, जिनका वे उल्लेख नहीं करते का वर्णन है।

कौटिल्य कहते हैं कि राज्य का कार्य दो तरह के कार्यों को करना है। पहला कार्य लोगों को सुरक्षा देना और उनका कल्याण करना दूसरा अपने आपको मजबूत बनाए रखना है। राज्य के पहले कार्य को वे *तन्त्र* और दूसरे कार्य को *द्रव* कहते हैं। अर्थशास्त्र को इस तरह से उन्होंने जमाया है, जिसमें पहला स्थान तन्त्र को है और दूसरा स्थान द्रव को।

प्रारम्भ में कहा गया है कि अर्थशास्त्र को 15 खण्डों में विभाजित किया है। पहले से पाचवां खण्ड तन्त्र है। तन्त्र में बताया गया है कि राजा को किस तरह अनुशासन व प्रशिक्षण में रहना चाहिए और उसके कर्तव्य क्या हैं, उसे किस तरह दण्ड के प्राधिकार में रखना चाहिए। उसे यह भी बताना चाहिए कि वह अधिकारीतन्त्र को कैसे स्थापित करे। इन अधिकारियों के विभिन्न विभागों को कैसे देखें, राजस्व के ब्यौरे को कैसे रखें। नागरिक एवं अपराध सम्बन्धी कानूनों को देखें और असामाजिक तत्वों तथा अधिकारियों के भुगतान को नियंत्रण में रखें।

अर्थशास्त्र के खण्ड 6 से 14 तक द्रव के क्षेत्र में आते हैं। इसमें राज्य के लक्षणों, विदेश नीति, खतरे और कठिनाइयाँ जो राजा के सिर पर आती हैं, प्राकृतिक आपदा जैसे कि बाढ, और सूखा, फौजी आक्रमण आदि को लिया गया है। अर्थशास्त्र में तकनीकी पद जो राजनीति के काम में आते हैं, उनका विवरण है। अर्थशास्त्र का तात्पर्य राज्य-नीति, राजनीतिक दर्शन अर्थात् राजधर्म और दण्ड के कानून, दण्ड-नीति। इस भाँति अर्थशास्त्र में राज्य की नीति, दण्ड-नीति आते हैं। यहाँ पर अर्थशास्त्र में अपने आपको राज्य और सामाजिक सम्बन्धों को जोड़ कर देखा है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि अर्थशास्त्र और कुछ न होकर राजनीतिक अर्थनीति का पाठ है। राजा का

मुख्य उद्देश्य है कि वह राज्य की धन-दौलत का प्रबन्धन करे। उनका अर्थ से तात्पर्य राज्य के वित्तीय पहलुओं से हैं।

अर्थशास्त्र की व्याख्या करने वाले विद्वान कहते हैं कि कौटिल्य ने राज्य को असीमित अधिकार दिये हैं। उसके लिए प्रत्येक राजा चक्रवर्ती है। इसका तात्पर्य यह है कि राजा को सारे विश्व पर शासन करने का अधिकार है। प्रशासन देश की आर्थिक जीवन पद्धति को नियमित करता है। राज्य के सभी संस्थानों की पूंजी पर अधिकार राज्य का है। राज्य को प्रत्यक्ष रूप में अपराधियों और गुलामों पर नियंत्रण रखने का अधिकार है। खानों, मत्स्य पालन, खेत-खलिहान, जंगल आदि पर राज्य का अधिकार है। इन पर प्रशासन चलाने के लिए राजा ठेकेदार भी रख सकता है। राजा अपनी खुफिया पुलिस के माध्यम से सजा दे सकता है। अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा भी दे सकता हैं।

पाठगत प्रश्न 23.2

रिक्त स्थानों की उपयुक्त शब्दों द्वारा पूर्ति कीजिए:

(1) मनु का कानून ..... कहलाता है।

(2) मनुस्मृति में ..... श्लोक हैं।

(3) अंतिम आश्रम.....कहलाता है।

(4) राजनीति के व्यवस्थित विज्ञान की व्याख्या..... ने की है।

(5) कौटिल्य के दूसरे नाम.....और ..... हैं।

(6) कौटिल्य..... का मुख्य वास्तुकार था।

(7) अर्थशास्त्र के ..... खण्ड या पुस्तकें हैं।

(8) क्योंकि कुछ विद्वान कहते हैं कि राज्य के प्रशासन का आंतरिक भाग अर्थव्यवस्था हैं इसलिए इसे ..... कहा जाता है।

23.4 मनु

इस पाठ के इस खण्ड में हम मनु के योगदान का संक्षेप में विवरण देंगे। मनु का कार्य यानी मनु संहिता को *मनुस्मृति* और मानव धर्मशास्त्र भी कहते हैं। हाल ही में मनु के

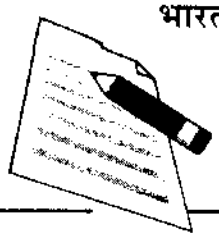

Notes

कार्य जिस स्वरूप में प्राप्त होते हैं शायद ही उनका पुनर्निर्माण ईसा पूर्व पहली शताब्दी में हुआ।

मनुस्मृति 2685 श्लोकों में बनी है। इसके बारह जिल्दे हैं। पहली जिल्द में जो प्रस्तावना है, वह मात्र प्रारम्भ है। पुस्तक के दूसरे खण्ड में कानून के स्रोतों का उल्लेख है, इसमें जीवन के चार आश्रमों का उल्लेख है, ये हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास है। ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी जीवन के कर्तव्यों का उल्लेख है, गृहस्थ आश्रम में गृहस्थी जीवन के कार्यों का उल्लेख है। वानप्रस्थ में व्यक्ति वन में निवास करता है और अंतिम आश्रम में संन्यास ले लेता है। पुस्तक के सातवें, आठवें और नवें खण्ड में विधि यानी कानून व्यवस्था की व्याख्या की गयी है। इस व्याख्या में कानून के स्रोतों, सामान्य राजनीतिक नियम, राजा के कर्तव्य, नागरिक और फौजदारी कानून का विवरण दिया गया है। दसवें खण्ड में जाति की उत्पत्ति उसके विकास और नियमों को दिया गया है। इस खण्ड में व्यापारी जातियों (वैश्य), निम्न जातियों (शुद्र) और अन्य जातियों का विवरण दिया गया है। पुस्तक के अंतिम भाग में सामान्य कानून, नैतिकता, भले और बुरे, उपहार, पाप-पुण्य, आदि का उल्लेख ग्यारहवें खण्ड में है। पुस्तक के अंतिम भाग में मनु ने यह बताया है कि भले और बुरे कार्यों का क्या भविष्य है और किस तरह से जन्म और मृत्यु से मोक्ष लिया जा सकता है। यह मोक्ष पुनर्जन्म से है।

मनु की यह सलाह है कि मनुष्य को अपने स्वयं के हितों पर नियंत्रण रखना चाहिए। इसका यह मतलब नहीं है कि उसे प्रसन्नता देने वाले कार्यों से दूर रहना चाहिए। मनु कहना चाहते हैं कि मनुष्य को जीवन का आनंद लेना चाहिए। उसे काम की प्राप्ति करनी चाहिए और दुनियाँ के मोह-माया अर्थात् अर्थ का आनंद लेना चाहिए। यद्यपि मनुष्य को प्रसन्नता और सांसारिक प्राप्तियों को नकारात्मक दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। वास्तव में मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य संसार से स्थायी मुक्ति पाना है। यह मुक्ति तभी संभव है, जब वह संन्यासी का जीवन बिताए। ऐसा करने के लिए उसे एक वनवासी की तरह जीवन बिताना चाहिए। वस्तुतः यह वानप्रस्थाश्रम की अवस्था है। इस आश्रम में वह गृहस्थाश्रम की अवस्थाको छोड़कर प्रवेश करता है। यह आवश्यक है कि गृहस्थी के जीवन को पूरा करने के बाद ही वह संन्यास आश्रम में प्रवेश करता है।

मनु ने चार वर्णों के अतिरिक्त अनुलोम व प्रतिलोम विवाह की चर्चा भी की है और यह चर्चा कई अन्य समाजिक समूहों की है। इसे वे जातियाँ कहते हैं, ये जातियाँ विभिन्न व्यवसायों की हैं। प्रत्येक सामाजिक समूह अपने कर्तव्य यानी स्वधर्म को करता है, व्यवसाय करता है और प्रत्येक व्यवसाय दूसरे व्यवसायों पर निर्भर होता है। इन

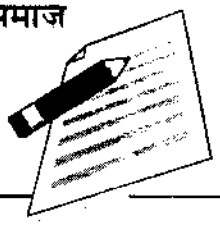

जातियों की पारस्परिक निर्भरता के कारण समाज में सामाजिक सुदृढता आती है। यह राजा का कर्तव्य है कि वह इस सुदृढता को लाने का प्रयास करे।

पाठगत प्रश्न 23.3

एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

(1) दर्शनशास्त्र की छः व्यवस्थाओं को बताइए जो वेदों के प्राधिकार को बताती हैं।

---

(2) सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने किस धर्म को अपना समर्थन दिया था।

---

(3) जैन धर्म के दो सम्प्रदायों का नाम लिखिए।

---

(4) चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र कौन था?

---

(5) शैववाद की अवधारणा से आप क्या समझते हैं?

---

(6) उस सम्राट का नाम दीजिए जिसके संरक्षण में भारत में बौद्ध धर्म समृद्ध हुआ।

23.5 वैष्णव आचार्य

हिन्दू धर्म में कई सुधार आंदोलन हुए हैं। मध्य युग की संस्कृति में वैष्णव आचार्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आम लोगों के लाभ के लिए इन आचार्यों ने सुधार की बात स्थानीय भाषा में की है। इन आचार्यों ने जाति के भेदभाव को नजरअंदाज किया है। उन्होंने अपने सम्प्रदाय में छोटी जातियों को भी स्वीकार कर लिया है। इन सुधारकों ने कर्मकाण्ड को स्वीकार नहीं किया है और इनका जोर नैतिकता तथा पवित्रता पर रहा है। रामानंद और चैतन्य जैसे आचार्यों को छोड़कर शेष अन्य आचार्यों ने मूर्ति पूजा और रहस्यवाद को स्वीकार नहीं किया है। रामानंद के शिष्य विभिन्न जातियों और वर्गों के रहे हैं।

रामानंद के शिष्यों में कबीर एक जुलाहा था। दादू एक पिंजारा था, तथा रविदास एक चमार था। इन वैष्णव आचार्यों ने कतिपय आचार्य विविध जातियों, वर्गों व धर्मों थे। धार्मिक सुधार आंदोलन में सबको समान दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया। इस सबके होते हुए भी कुछ समुदायों में जैसे कि हिन्दू और मुसलमान पृथक बने रहे।

23.6 सिख धर्म

नानक (1469-1539) के विचारों में एक ईश्वर की अवधारणा पुनर्जाग्रत हुई। वे सिख धर्म के संस्थापक थे। नानक का विश्वास था कि सच्चा ईश्वर तो एक ही है जिसका कोई नाम नहीं है। उनका विश्वास था कि ईश्वर और उसके अनुयायियों यानी जनता में किसी की मध्यस्थता नहीं है। नानक ने कर्मकाण्ड और संस्कारों को धर्म में महत्व नहीं दिया। उनका मानना था कि धर्म और लोगों के बीच में कोई पैगम्बर या पुरोधा नहीं है। उनका विश्वास एक स्वयं अस्तित्व रखने वाले कर्ता में था। इस कर्ता की प्रकृति को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। ईश्वर की प्राप्ति चिन्तन और मनन से नहीं हो सकती, इसकी प्राप्ति तो विश्वास और भरोसे से हैं। नानक के विचारों पर भक्ति की जो विचारधारा है, उसके प्रभाव को हम यहाँ देखेंगे।

23.7 19वीं शताब्दी की विचारधाराएँ

18वीं शताब्दी एक ऐसा युग था, जिस पर पश्चिमी विचारधारा का प्रभाव था। इन दोनों के परिणामस्वरूप 19वीं शताब्दी में धार्मिक सुधार आए। परिणामस्वरूप ब्रह्म समाज, आर्य समाज और थियोसोफीकल सोसाइटी की स्थापना हुई। 19वीं शताब्दी के अन्त में रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्म को एक स्पष्ट दिशा दी। रामकृष्ण के शिष्य स्वामी विवेकानंद ने वेदान्त दर्शन को विकसित किया। इस अध्याय के अन्त में हम उनके योगदान की चर्चा करेंगे।

पाठगत प्रश्न 23.4

निम्न कथनों में कौन सा कथन सही है और कौन सा गलत। सही कथन के आगे 'सही' और गलत कथन के आगे 'गलत' लिखिए:

(1) वैष्णव आचार्यों ने जाति के भेदभाव को नजरअंदाज किया। ( )

(2) रामानन्द के शिष्य उच्च जाति के ही थे। ( )

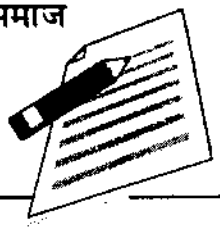

(3) र ,ोहित जाति के थे। ( )

(4) ग. नानक उस धर्म के संस्थापक थे, जो बाद में सिख धर्म के नाम से जाना गया। ( )

(5) स्वामी राकृष्ण परमहंस के शिष्य धर्मदास थे। ( )

23.8 गौतम बुद्ध

बुद्ध की अवधारणा का आशय ज्ञानोदय से है। वह व्यक्ति जिसने जीवन के ज्ञान को समझ लिया है, उसे बुद्ध कहते हैं। बुद्ध का मतलब सिद्धार्थ गौतम के उपदेशों से है। गौतम छठी शताब्दी ईसा पूर्व दक्षिण नेपाल के एक छोटे साम्राज्य के हिन्दू राजकुमार थे।

बौद्ध धर्म का केन्द्रीय सिद्धान्त यह है कि एक विशिष्ट जीवन पद्धति को प्राप्त करने पर मोक्ष (निर्वाण, निब्बान) अर्थात् आवागमन से मुक्ति पाना। इस मुक्ति को बौद्ध धर्म *चार महान् सत्य* कहते हैं। ये सत्य इस प्रकार हैं:

- मनुष्य के दुख का कारण उसकी तृष्णा एवं लोभ है। इसी के साथ मनुष्य का मोह और अविद्या है।
- जीवन दुख का कारण है।
- इच्छाएँ मनुष्य में इर्ष्या व क्रोध के कारण पैदा होती हैं और इससे दुख पैदा होता है। इन इच्छाओं को समाप्त करना मुक्ति प्राप्त करने की आवश्यक शर्त है।
- इसलिए मनुष्य को उस रास्ते पर चलना चाहिए जो इच्छाएँ पैदा न करें। इसका कारण यह है कि यही सुख का एकमात्र रास्ता है, जिसे हम मुक्ति कहते हैं।

क्योंकि मनुष्य में इच्छाएँ है, वे भाग्य के पहियों की बेड़ियों से जकड़े हुए हैं और एक जन्म से दूसरे जन्म से बंधे हुए हैं। अपने जीवन के अंत में अधिकांश लोग इतनी अपूर्ण इच्छाओं से बंधे रहते हैं कि उनके शरीर को दूसरा जन्म लेना पड़ता है और दूसरी बार इच्छा एवं दुख की यात्रा पुन: हो जाती है। मुक्ति के रास्ते पर चलने के लिए मनुष्य को अष्टपथ पर पुन: चलना चाहिए। इस अष्टपथ का मतलब है – सही विचारधारा, सही अभिवृत्ति, सही वाणी, सही व्यवहार, जीवनयापन के सही साधन, सही उद्देश्य, मस्तिष्क पर सही नियंत्रण और सही मनन या चिन्तन। अष्टपथ का यह रास्ता व्यक्ति को अहंकार की अवस्था से उठाकर करुणा के रास्ते पर ले आयेगा। यह करुणा का रास्ता पुनर्जन्म की बेड़ियों से मुक्ति देगा। वृद्धावस्था नहीं आयेगी एवं मृत्यु का दरवाजा

बन्द कर देगी। बौद्ध धर्म में न तो धर्म की कोई अवधारणा है और न किसी वैयक्तिक ईश्वर की विचारधारा है। अष्टपथ के अतिरिक्त मनुष्य को निम्नलिखित पाँच सिद्धांतों को मानना चाहिए:

- जीवित प्राणियों को घायल करने से बचना चाहिए।
- उन वस्तुओं से अपने आपको दूर रखना चाहिए, जो आपको दी नहीं गयी हैं।
- काम से जुड़ी हुई इच्छाओं से अपने को दूर रखना चाहिए।
- किसी भी प्रकार के झूठ से, शब्द और क्रिया में स्वयं को दूर रखना चाहिए।
- संसार के सभी मौज-मजा, नशाखोरी तथा लालचीपन से स्वयं को बचाना चाहिए।

बौद्ध धर्म को मानने वाले व्यक्ति को ब्रह्म विहार यानी ईश्वर सम्बन्धी वातावरण में अपने आपको रखना चाहिए। ब्रह्म विहार में रहने के चार नियम हैं:

- *सभी जीवों के प्रति दया की भावना:* बौद्ध धर्मावलम्बी को अन्य जीवों के प्रति दया की भावना रखनी चाहिए।
- *करुणा:* एक बौद्ध यह जानता है कि उसकी तरह अन्य जीवावलम्बी है। उसका यह प्रयत्न होता है कि वह सभी जीवधारियों को मदद दें।
- *मुदिता :* बौद्ध धर्मी सबको प्रसन्न रखने का प्रयास करते हैं। बुद्ध ने सतत् यह कहा है: 'सभी को प्रसन्न रखो'।
- सभी को अपने मस्तिष्क में शान्त और स्वभाव में सरल होना चाहिए। (उपेक्षा एवं अपेक्षा): बौद्ध के मस्तिष्क को अशांत करने की कोई क्रिया नहीं होनी चाहिए। सभी ताकतवर संवेग हानिकारक है। वे लोग जो संवेगों से और संसार की मोह-माया से जुड़े हुए नहीं हैं उन्हें मौत का डर नहीं होता। दूसरे शब्दों में प्रबुद्ध व्यक्ति किसी से डरते नहीं।

23.9 कबीर, भक्ति परम्परा के एक संत

कबीर 15वीं शताब्दी के संत थे। हिन्दू व मुसलमान दोनों ही उनका सम्मान करते थे। यद्यपि उनकी जीवनी तथा जन्म के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, सभंवतया वे एक मुस्लिम जुलाहे के परिवार में पैदा हुए थे। उनके शब्द एक ऐसे मूल पाठ में संग्रहित हैं जिन्हें *बैजेक* कहते हैं। इन शब्दों में कुछ ऐसे हैं, जो सिखों के गुरुग्रन्थ साहिब में रखे गये हैं जिन्हें गुरु अर्जुन ने 1604 में गुरु ग्रन्थ में रखा है। उदार विचार वाले हिन्दू और मुसलमान कबीर को हिन्दू-मुस्लिम एकता का सूत्रधार मानते हैं। यह बात भी कही जाती है कि हिन्दू-मुस्लिम धर्म एक दूसरे के विपरीत नहीं है। कबीर ने लोगों

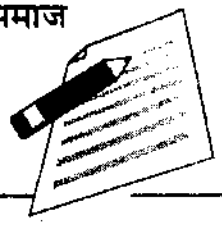

को कहा कि वे सत्य की खोज धार्मिक ग्रन्थों में नहीं करें। वे यह भी कहते हैं कि लोगों को योगिक क्रियाओं में ईश्वर की खोज नहीं करनी चाहिए। वे सरल और प्राकृतिक जीवन में विश्वास करते थे। किसी भी एक जुलाहे की तरह वे स्वयं करघे पर कपड़ा बुनते थे और इसे बाजार में बेचते थे। कबीर के लिए धार्मिक जीवन का मतलब आलस्य से भरा जीवन नहीं था। मनुष्य को काम करना चाहिए उसे अपने जीविकोपार्जन के लिए कमाना चाहिए और एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। धन का संचय नहीं करना चाहिए, यह इसलिए कि संचित धन भ्रष्टाचार को बढ़ाता है। धन को हमेशा परभ्रमण करना चाहिए। कबीर की दृष्टि में इस संसार की अभिव्यक्ति सामान्य विचारों और लोगों की भाषा में है।

कबीर के विचारों में धर्म की अवधारणा वैयक्तिक ईश्वर की भावना से परे है। लोग उसे राम या खुदा क्यों न कहें। सभी ओर पायी जाने वाली जो वास्तविकता है, उसकी अभिव्यक्ति ही इन शब्दों में है। कबीर एक सतगुरु की तरह बोलते हैं और यह सतगुरु अपनी आत्मा के अन्दर से बोलता है। विभिन्न धर्मों में जो अन्तर है, वह केवल नाम का है। सच्चाई यह है कि सभी ओर लोग उस एक ईश्वर की ही खोज कर रहे हैं। कबीर इसी कारण पूछते हैं कि जब सबको एक ही ईश्वर की खोज है, तब उनमें झगड़े किस बात के। कबीर पवित्र कहे जाने वाले व्यक्तियों की आलोचना करते हैं, वे पिछड़े हुए लोगों के मसीहा हैं। उनके विचार सभी धार्मिक समूहों और ग्रन्थों में पाये जाते हैं। जब कबीर उत्तर प्रदेश के गोरखपुर नाम के मगहर कस्बे में मरने की अवस्था में थे, उनके हिन्दू और मुसलमान अनुयायी उनका दाह संस्कार उन्हीं के रीतिरिवाज से करना चाहते थे, कहते हैं कि कबीर एक तम्बू में विश्राम के लिए गये और वे स्वर्ग सिधार गए। मरते समय कबीर का शरीर तम्बू से ओझल हो गया तथा इस स्थान पर फूलों का एक ढ़ेर दिखायी देने लगा। फूलों के इस ढेर को दो भागों में बांट दिया गया। मुसलमान अनुयायियों ने इस भाग को मगहर में दफना दिया और हिन्दू अनुयायियों ने फूलों के ढेर को वाराणसी में कबीर चौराहे पर दाह संस्कार कर दिया। आज भी दोनों समुदायों के लोग कबीर का सम्मान सत्य के मसीहा के रूप में करते हैं। दोनों ही सम्प्रदाय उन्हें सार्वजनिक धर्म का प्रणेता मानते हैं।

पाठगत प्रश्न 23.5

निम्न प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए:

(1) बुद्ध की अवधारणा का क्या अर्थ है?

---

(2) बौद्ध धर्म में किसके उपदेशों को सम्मिलित किया गया है?

---

(3) एक बौद्ध को किस अष्टपथ के सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए?

---

(4) कबीर किस शताब्दी में आये?

---

(5) कबीर के गुरु कौन थे?

---

(6) गुरु ग्रन्थ साहिब का संकलन कब हुआ?

---

(7) किसने गुरु ग्रन्थ साहिब का संकलन किया?

---

(8) किस कस्बे में कबीर का देहान्त हुआ?

23.10 स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द नरेन्द्र नाथ दत्त के रूप में 12 जनवरी 1863 को बंगाल के एक अभिजात कायस्थ परिवार में हुआ। नरेन्द्र नाथ एक तार्किकवादी के रूप में जाने जाते हैं वे किसी पर बिना वैध प्रमाण के स्वीकार नहीं करते थे। छोटी उम्र में वे केशवचन्द्र सेन के सम्पर्क में आए। सेन ब्रह्म समाज के सदस्य थे और वे केशव चन्द्र के उपदेशों से प्रभावित हुए। उनका कहना था, मनुष्य अपने स्वयं के प्रयत्नों से पूर्ण हो सकते हैं। नरेन्द्र नाथ ने ब्रह्म समाज के सामाजिक सुधारों को आगे बढ़ाया लेकिन उन्होंने तपस्वी के मार्ग को नहीं अपनाया।

नवम्बर 1881 में नरेन्द्र नाथ का ब्रह्म समाज के महान् आचार्य दक्षिणेश्वर के मकान में संयोग से रामकृष्ण परमहंस (1836-1886) जो काली के भक्त थे का मिलना हुआ। इसके बाद नरेन्द्र नाथ रामकृष्ण के साथ मिलते रहे। वे बराबर परमहंस के आध्यात्मिक अनुभवों से संतुष्ठ नहीं थे। अन्त में एक बार रामकृष्ण के स्पर्श मात्र से नरेन्द्र नाथ को एक अस्मरणीय अनुभव हुआ, यह गहन धार्मिक प्रशिक्षण रामकृष्ण की अप्रैल 1886 की मौत तक याद रहा।

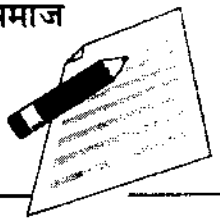

नरेन्द्र नाथ ने संसार का त्याग कर दिया और वे तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। इस अवधि में उन्होंने अध्यात्मिक स्थिति में बदलाव अनुभव किया और उसे वेदान्त दर्शन में लगा दिया। उन्होंने रामकृष्ण की भक्ति में अन्त:दृष्टि पैदा की। नरेन्द्र नाथ ने अपने इस धार्मिक मार्ग को बुद्ध और आधुनिक सुधारकों के साथ जोड़ दिया। नरेन्द्र नाथ में महत्वपूर्ण बदलाव 1893 में हुआ, जब शिकागो में हिन्दू धर्म के अखिल विश्व संसद की बैठक हुई।

शिकागो में अपने भाषण और यहीं पर हुए अन्य व्याख्यानों में विवेकानन्द ने पश्चिमी दुनियाँ को यह सुझाव दिया कि वे अपने सहयोग से हिन्दू धर्म को अधिक शक्तिशाली बनाएं। उन्होंने यह स्वीकार किया कि सभी धार्मिक सम्प्रदाय सही हैं लेकिन इन सम्प्रदायों की जननी हिन्दू धर्म है। संदेह और अविश्वास के सभी स्वरूप हिन्दू विचारधारा में हैं। विवेकानंद ने एक धार्मिक आन्दोलन को चलाया जिसके सिद्धान्त हिन्दू धर्म से लिए गये थे। उन्होंने पश्चिमी विधाओं के आधार पर न्यूयार्क में 1895 में वेदान्त समाज की स्थापना की, जिसकी शाखाएं लंदन और बोस्टन में थी। विदेश में चार सफल वर्ष बिताने के बाद विवेकानन्द 1897 में भारत लौटे। उन्होंने यहाँ रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1 मई 1897 में की। इस मिशन के आज विश्व में सैकड़ों केन्द्र हैं।

विवेकानन्द ने बाल विवाह का विरोध, तथा निम्न जातियों पर होने वाले शोषण का विरोध किया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि गरीब अशिक्षित और रोगियों की सेवा समाज का आवश्यक तत्व है। विवेकानन्द ने कहा कि मनुष्य जाति की सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म माना। उन्होंने अपने धर्म को लोगों का सबसे बड़ा आधार मानते हुए, इसे व्यावहारिक वेदान्त के नाम से परिभाषित किया। उनका मिशन यूरोपीय समाज का था, इसका आधार भारतीय धर्म था। दूसरे शब्दों में, विवेकानंद ने यह प्रयास किया कि मनुष्य के विचार अध्यात्मिक और भौतिक हैं।

पाठगत प्रश्न 23.6

सही उत्तर पर (✓) चिन्ह और गलत पर (×) का चिन्ह लगाएं:

(1) स्वामी विवेकानंद का सांसारिक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। ( )

(2) स्वामी विवेकानंद जन्म से ब्राह्मण थे। ( )

(3) स्वामी विवेकानंद किसी भी विचारधारा को तब तक स्वीकार नहीं करते थे जब

तक कि उसका प्रमाण न हो। ( )

(4) रामकृष्ण परमहंस ने स्वस्थ हिन्दू धर्म के विचार को स्वीकार किया। ( )

(5) केशव चन्द्र सेन ने थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की। ( )

आपने क्या सीखा

- भारत में विभिन्न सामाजिक विचारों का विकास।
- इन विचारों के विकास का सर्वेक्षण सिन्धु नदी घाटी से आज तक किया है।
- भारतीय सामाजिक विचारधाराओं में मनु, चाणक्य, बुद्ध, कबीर और विवेकानंद ने जो योगदान किया है, उसका विश्लेषण।
- उपनिषद विभिन्न समयावधि में विद्वानों द्वारा सम्मिलित रूप से बनायी गयी कृतियाँ।
- प्रारम्भिक उपनिषदों के बाद में वैयक्तिक ईश्वर की अवधारणा, जिसकी भक्ति के साथ में उपासना होती थी।
- ईसा पूर्व 400 और 200 वर्षों के बीच में दर्शन की छः व्यवस्थाएँ आईं–न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और वेदान्त।
- इतिहासकार चौथी शताब्दी को भारत में एक महत्वपूर्ण मोड़ मानते हैं। इस समय से ब्राह्मणों के धर्म यानी हिन्दू धर्म ने महत्वपूर्ण स्थान पाया। धीरे-धीरे हिन्दू धर्म का स्थान महत्वपूर्ण होता गया और बौद्ध व जैन धर्म का पतन होने लगा।
- दूसरी शताब्दी के बाद से ही इसाई समुदाय भारत में पाया गया है।
- जरतुश्त धर्म के अनुयायी पारसी कहलाते हैं। ये पारसी भारत में 10वीं शताब्दी में आए।
- नानक (1469-1539) ने पहली बार एक ईश्वर की अवधारणा को पुनर्जीवित किया। नानक को सिख धर्म का संस्थापक मानते हैं।
- ब्रह्म समाज, आर्य समाज और थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना 19वीं शताब्दी के अन्त में हुई। रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्म को एक नई दिशा दी।
- मनु ने मनु संहिता, धर्मशास्त्र और मनुस्मृति की रचना की।
- राजनीति के व्यवस्थित विचारों को कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में प्रस्तुत किया। कौटिल्य को चाणक्य या विष्णुगुप्त भी कहते हैं।

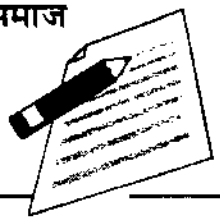

Notes

- बुद्ध का आशय ज्ञानोदय है। अर्थात वह व्यक्ति जिसने जीवन के ज्ञान को प्राप्त कर लिया है।
- कबीर 15वीं शताब्दी के संत थे। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही उन्हें आदर देते थे।
- नरेन्द्र नाथ का धार्मिक नाम स्वामी विवेकानंद था। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 में बंगाल के एक अभिजात कायस्थ परिवार में हुआ था।
- नरेन्द्र नाथ ने ब्रह्म समाज के सुधार कार्यक्रम को अपनाया। लेकिन संन्यासी जीवन के विचार को स्वीकार नहीं किया।
- विवेकानंद का मिशन एक यूरोपीय समाज की स्थापना करना था, जिसका केन्द्र भारतीय धर्म था।

पाठान्त प्रश्न

(1) बौद्ध धर्म के संस्थापक कौन थे? इस धर्म के महान् सत्य क्या थे? वर्णन कीजिए।

---

(2) कौन से धर्म भारत के बाहर से आए? इनका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

---

(3) मनुस्मृति में किन विचारों का वर्णन है? विवेचन कीजिए।

---

(4) कौटिल्य के अर्थशास्त्र में किन विषयों का उल्लेख है? अपने शब्दों में लिखिए।

---

(5) किस तरह कबीर निम्न वर्गों के लिए आदर्श बन गये? विवेचन कीजिए।

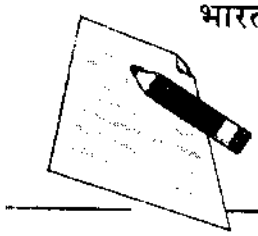

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

(1) मोहनजोदड़ो (2) हिन्दू धर्म (3) वेद (4) बलिदान
(5) उपनिषद (6) राजकीय (7) वर्धमान महावीर
(8) तीर्थंकर (9) अहिंसा (10) चार पुराण

23.2

(2) जैन धर्म (3) दिगम्बर, श्वेताम्बर
(4) सम्राट अशोक (5) शैवधर्म शिव की आराधना करता है
(6) इसाई धर्म, जरतुश्त, इस्लाम (7) पारसी
(8) सातवीं शताब्दी के अन्त में, 712 ई.
(9) अशोक

23.3

(1) सही (2) गलत (3) गलत
(4) सही (5) गलत

23.4

(1) मनुस्मृति (2) 2,685 (3) राजा
(4) कौटिल्य (5) चाणक्य और विष्णुगुप्त (6) मौर्य
(7) पन्द्रह (8) राजनीतिक अर्थव्यवस्था

23.5

(1) ज्ञानोदय (2) सिद्धार्थ गौतम
(3) सही विचार, सही दृष्टिकोण, सत्य बोलना, सही आचरण, जीवन के हेतु सही साधनों को अपनाना, सही मस्तिष्क नियंत्रण और सही मनन-चिन्तन
(4) 15वीं शताब्दी (5) रामानन्द
(6) 1604 (7) गुरु अर्जुन
(8) मगहर

23.6

(1) सही (2) गलत (3) सही
(4) गलत (5) गलत